



Prabhat Khabar's Senior Journalist Rajeev Pandey Received 'Laadli Media Award'

Why In News?

Recently, Rajiv Pandey, a senior journalist of Prabhat Khabar's Ranchi unit, has been awarded the 'Laadli Media Awards 2023' by 'Population First', a prestigious organization working in the field of gender equality.

Key Points:

- The Laadli Media Award is given by the 'Population First' organization for promoting gender sensitivity. The Laadli media award was announced by the organization on October 21 this year.
- More than 850 journalists from across the country in 13 languages had submitted entries for the award, out of which 87 were selected and felicitated by the jury members. Apart from these, 31 journalists were given jury commendation letters.
- Prabhat Khabar has received the award at the 13th Laadli Media and Advertising Award for Gender Sensitivity (Regional) 2023 organized by Population First Organization. Last year, another journalist of Prabhat Khabar, Guruswaroop Mishra, was also honoured with the award.
- He received the award for a story on domestic workers titled 'Poor condition of domestic workers, no leave and no proper wages' published by Rajiv Pandey, chief correspondent of Prabhat Khabar Ranchi unit.
- The vice-chancellor of Baba Amte Divyang University, Jaipur, Prof. S.K. Singh was also present on the occasion. Dr Dev Swarup, Head of Policy and Partnerships, United Nations Population Fund, Jaideep Biswas, Programme Management Specialist, UNFPA, Anuja Gulati, Programme Management Specialist and Kalyan Singh Kothari, Secretary, Lok Samvad Sansthan felicitated Pandey.
- It is worth mentioning that Rajiv Pandey has already been given three fellowship awards by Chennai-based institute REACH. In the year 2014, jharkhand has received fellowships on the status of TB disease, non-communicable diseases in the year 2019 and diabetes in the year 2023.

//



रांची | पटना | जमशेदपुर | धनबाद | देवघर | कोलकाता | नुवाकोटपुर | भांगलपुर से प्रकाशित

घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहनताना

राजीव पंडेय, रांची

घरेलू कामगारों में 70% को मासिक मजदूरी 3,000 रुपये और 10% को अधिकतम 4,000 रुपये का वेतनमान मिलता है, जबकि 20% कामगार 2000 रुपये से भी कम कमाने को विवश हैं। घरेलू कामगारों में 40.9% शिक्षित हैं, जबकि आरक्षण्ड एंटी ट्रेडिंग नेटवर्क और स्पार्क संघों द्वारा 'आरक्षण्ड' के घरेलू काम करनेवालों को शिक्षित पर विवेक रखे नहीं मिलते हैं।

68.6% को छह से चार दिन की छुट्टी मिलती है छुट्टी: रिपोर्ट में बताया गया है कि 40.9% में 13.1 को रिक्त और 15% ने स्ट्रोकटाइप को पढ़ाई पूरी की है, कम वेतन और शिक्षित होने के बाद भी 68.6% को मासिक मजदूरी से कम मिलती है, अन्य कारणात्मक अवकाश और एंटीस्ट्रेट के अनुसार छुट्टी लेते हैं, 50%से अधिक घरेलू कामगार रोजगार का भोजन (उनके द्वारा से जगमग) अपने परिवार के घरेलू में खाते हैं, लेकिन खाते के किन्हीं भी व्यय का उद्योग नहीं करते हैं, घरेलू पर वेतन उनके खाने भी खाना पढ़ते हैं, खाते कुछ तो आरक्षण्ड को शिक्षित के बने खा लेते हैं, अगर उनके अधिक पालू को बाल को जाने, तो लगभग 85% घरेलू में काम करनेवालों का कच्चा पर है और अलग किचन नहीं है, उनके अलावा उनको घरेलू के लिए कुर्यां के पाने पर आश्रित रहना पड़ता है, उनके कच्चे करने के समय बा भी आकलन किचन मचा है, जिसमें 47.6% आगम नहीं कर पाते हैं,

आरक्षण्ड एंटी ट्रेडिंग नेटवर्क और स्पार्क की सर्वे रिपोर्ट

70% को महीने में मात्र ₹3,000

10% को महीने में ₹4,000

20% को महीने में ₹2,000 से भी कम मिल रहे हैं

40.9% घरेलू कामगार शिक्षित

59.1% घरेलू कामगार अशिक्षित पाये गये

67% के पास राइडकिल और 10% के पास टेलीविजन

रिपोर्ट की मने तो घरेलू कामगारों की संख्या भी संतोषदायक नहीं है, 67 फीसदी के पास राइडकिल, 8 फीसदी के पास प्रेसर कुकर, 34 फीसदी के पास रेडियो, 10 फीसदी के पास टेलीविजन और लगभग 6 फीसदी के पास मिजली के पखे हैं, इन्हीं समझौते स्थिति भी बेहतर नहीं है, डेन, बिजली और शौचालय की सुविधा भी ठीक से नहीं मिलती है, इन्हीं आग 81.8 फीसदी कम करने और 10.2 फीसदी कृषि से होती है, वहीं 1.5 फीसदी के पास खरसरा और 6.6 फीसदी के पास आग के अन्य स्रोत हैं,

आरक्षण्ड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति पर हुई चर्चा

आरक्षण्ड एंटी ट्रेडिंग नेटवर्क और स्पार्क संघों द्वारा 'आरक्षण्ड' के घरेलू काम करने वालों की स्थिति पर चर्चा की गयी, कटराटाली स्थित टोलर टोलर डेड में आयोजित इस कार्यक्रम में समाजिक कार्यकर्ता लक्ष्मीराम राहु ने कहा कि अनुसूचित जातियों व जनजातियों के उद्योग के लिए सरकार और वीर सरकारों सरकारों को मिलकर काम करना होगा, अतिरिक्त इंडिया की सरकार सुनिश्चने कर कि डोमेस्टिक वर्कर्स जब अपने समस्त लेबर पुरिस अवकाश सरकारी संस्थानों के पास जाते हैं तो उन्हें बड़े समस्तों का समन बनना पड़ता है, बड़े कर उनके ही बचन पर सवाल उठाया जाता है, और फरकर मुकुर ने कहा कि इन्हीं मध्य की जरूरत है,

Wed, 30 March 2022
प्रभात खबर <https://epaper.prabhatkhabar.com/c/67129892>